NAME OF THE COLLEGE - GODDA COLLEGE, GODDA

Sl No	Date	Name of the Teacher	Subject	Sem	Topic	Mode adopted
01	09.04.2020	Md Mahtab Ahmad	Tc - 201	B.Ed Sem - 02	Attention	Pdf

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

Scanned by CamScanner

"*Attention is always accompanied by interest.*"

—**Drummond and Mellone** (p. 131)

मानव जीवन की प्रत्येक क्रिया उसकी रुचि और अवधान पर ही निर्भर करती है। अवधान व रुचि के बिना शिक्षा का कार्यक्रम भी नहीं चल सकता है क्योंकि जब बालक को उसमें रुचि नहीं होगी तो वह उस विषय पर ध्यान नहीं देगा और वह अपने उद्देश्य में भी सफल नहीं हो पायेगा। अतः शिक्षा के क्षेत्र में अवधान एवं रुचि की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इस अध्याय के अंतर्गत हम अवधान और रुचि के महत्त्व, उनकी परिभाषाओं, विशेषताओं एवं प्रकारों पर विस्तारपूर्वक उल्लेख करेंगे।

'अवधान' क्या है ?

किसी उत्तेजना के प्रति चेतना व चित्तवृत्तियों के केन्द्रीकरण को हम अवधान की संज्ञा दे सकते हैं। व्यक्ति के सम्मुख निरन्तर विभिन्न प्रकार की उत्तेजनाएँ उपस्थित होती रहती हैं। वह प्रत्येक के प्रति समान रूप से चेतन नहीं रहता। वह केवल कुछ ही उत्तेजनाओं को या एक वस्तु से सम्बद्ध उत्तेजना को ही ध्यान केन्द्र में लाता है। उत्तेजनाओं का यह चयन उसकी रुचि पर निर्भर है। उदाहरणार्थ—सड़क पर चलते हुये हम सभी वस्तुओं के प्रति समान चेतना नहीं प्रदर्शित करते हैं केवल उन्हीं वस्तुओं पर ध्यान देते हैं जो हमारी रुचि का विषय होती हैं। इसके अतिरिक्त ध्यान को दिशा निर्धारित करने में, ध्यान की दशाओं की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

अवधान का अर्थ व परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF ATTENTION)

हम जीवन में अनेक प्रकार की वस्तुएँ देखते हैं। कुछ के विषय में सुनते हैं। हम कुछ की ओर आकर्षित होते हैं तथा कुछ की ओर हमारा ध्यान अनायास ही चला जाता है। ये सभी व्यवहार अवधान कहलाते हैं।

'चेतना' व्यक्ति का स्वाभाविक गुण है। चेतना के ही कारण उसे विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान होता है। यदि वह कमरे में बैठा हुआ पुस्तक पढ़ रहा है, तो उसे वहाँ की सब वस्तुओं की कुछ-न-कुछ चेतना अवश्य होती है; जैसे—मेज, कुर्सी, अलमारी आदि। पर उसकी चेतना का केन्द्र वह पुस्तक है, जिसे वह पढ़ रहा है। चेतना के किसी वस्तु पर इस प्रकार के केन्द्रित होने को **'अवधान'** कहते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी वस्तु पर चेतना को केन्द्रित करने की मानसिक प्रक्रिया को **'अवधान'** या **ध्यान** कहते हैं।

Scanned by CamScanner

'अवधान' के अर्थ को हम निम्नांकित परिभाषाओं से पूर्ण रूप से स्पष्ट कर सकते हैं—

1. डमविल—"किसी दूसरी वस्तु के बजाय एक ही वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।"

"Attention is the concentration of consciousness upon one object rather than upon another." **—Dumville** (p. 315)

2. रॉस—"अवधान, विचार की किसी वस्तु को मस्तिष्क के सामने स्पष्ट रूप से उपस्थित करने की प्रक्रिया है।"

"Attention is a process of getting an object of thought clearly before the mind." **—Ross** (p. 170)

3. वेलेन्टाइन—"अवधान, मस्तिष्क की शक्ति न होकर सम्पूर्ण रूप से मस्तिष्क की क्रिया या अभिवृत्ति है।"

"Attention is not a faculty of the mind. It rather describe an attitude or activity of the mind." **—Valentine** (p. 228)

4. मार्गन एवं गिलीलैंड—"अपने वातावरण के किसी विशिष्ट तत्व की ओर उत्साहपूर्वक जागरूक होना ध्यान कहलाता है। यह किसी अनुक्रिया के लिये पूर्व समायोजन है।"

"Attention is being keenly alive to some specific factor in our environment. It is a preparatory adjustment for response." **—Morgan and Gilliland**

5. मन—"अवधान के किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाय, अन्तिम विश्लेषण अवधान को प्रेरणात्मक क्रिया कहते हैं।"

"Attention from whatever angle we consider it, is in the last analysis a motivation process." **—N. L. Munn**

अवधान की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF ATTENTION)

(i) मानसिक सक्रियता (Conation)—किसी वस्तु पर ध्यान देने के लिये मानसिक सक्रियता का होना आवश्यक है। जैसे हम गुलाब के फूल पर ध्यान दें तो मन उसकी विशेषताओं की ओर खिंच जाता है और सक्रिय हो जाता है। ध्यान मानसिक सक्रियता का ही रूप है।

(ii) चंचलता/गतिशीलता (Mobility)—अवधान की स्थिरता न के बराबर होती है। यह बहुत ही चंचल होता है। किसी वस्तु पर यह 10-12 सैकेण्ड से ज्यादा नहीं ठहर पाता। इस चंचलता के कारण ही व्यक्ति सदैव नवीन वस्तुओं को खोज निकालने में रुचि लेता है।

(iii) चयनात्मकता (Selectiveness)—जिस वस्तु की ओर हमारी रुचि अधिक होगी, अवधान का झुकाव भी उधर ज्यादा होगा और ध्यान की स्थिरता उस वस्तु पर और वस्तुओं की अपेक्षा ज्यादा हो जायेगी। रुचिकर वस्तुओं पर हमारा ध्यान जल्दी पहुँचता है।

(iv) संकुचितपन (Narrowness)—ध्यान का विस्तार बहुत ही संकुचित होता है। एक समय में हम तमाम वस्तुओं पर एक साथ ध्यान नहीं दे सकते हैं क्योंकि ध्यान चयनात्मक एवं संकुचित होता है। यह रुचिकर वस्तु पर शीघ्रता से आकर्षित होता है।

(v) प्रयोजनता (Purposiveness)—जब हम किसी सुन्दर वस्तु को देखते हैं तो हमारा ध्यान उधर खिंच जाता है। चूँकि हमें सौंदर्य की एक आकर्षक अनुभूति हुई और इसलिये हमारा ध्यान उधर खिंच गया। कहने का तात्पर्य यह है कि ध्यान किसी न किसी प्रयोजन को साथ लिये होता है। जहाँ पर प्रयोजन पूर्ति की जितनी ज्यादा संभावना होगी वहाँ पर अवधान की स्थिरता उतनी ही ज्यादा हो जायेगी।

(vi) तत्परता (Readiness)—**वुडवर्थ** के शब्दों में, "प्रारम्भिक तत्परता या तैयारी अवधान में

Scanned by CamScanner

आवश्यक प्रतिक्रिया है।" अर्थात् किसी वस्तु पर ध्यान देने के लिये व्यक्ति को तत्पर होना आवश्यक है।

(vii) गतियों का समायोजन (Motor Adjustment)—किसी विशेष वस्तु में समायोजन का होना आवश्यक है जबकि उस पर ध्यान दिया जाता है। जैसे देखने के लिये नेत्रों की गतियों का समायोजन दृश्यों से होता है।

(viii) सक्रिय केन्द्र (Active Centre)—हम जिन वस्तुओं पर ध्यान देते हैं वे हमारे मन में सक्रिय रूप से स्पष्ट हो जाती हैं। ठीक इसके विपरीत हम जिन वस्तुओं के प्रति ध्यान नहीं देते हैं उनका हमारे मन में कोई असर नहीं पड़ता।

(ix) अन्वेषणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक प्रवृत्ति (Exploratory, Analytic and Synthetic Attitude)—वुडवर्थ के शब्दों में, "अवधान चंचल होता है क्योंकि वह अन्वेषणात्मक है, वह निरन्तर छानबीन के लिये कोई ताजी चीज खोजता रहता है।" हमारा ध्यान प्रायः नयी वस्तुओं की ओर केन्द्रित होता है और नयी चीज मिलने पर व्यक्ति उसके ढाँचे एवं उसके रंग-रूप पर विश्लेषण एवं संश्लेषण करने लगता है। यही मानव की प्रवृत्ति है।

(x) अवधान की अवस्थायें (Stages of Attention)—इसकी दो अवस्थायें होती हैं—

(i) भावात्मक अवस्था

(ii) अभावात्मक अवस्था

जब हमारा अवधान एक पहलू की ओर जाता है तो दूसरे पहलू की ओर से अवधान स्वतः ही हट जाता है। पहली अवस्था भावात्मक तथा दूसरी अवस्था अभावात्मक अवस्था कहलाती है।

अवधान के प्रकार
(KINDS OF ATTENTION)

मनोवैज्ञानिक जे. एस. रॉस ने अवधान को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया है—

अवधान
(Attention)

- 1. ऐच्छिक अवधान (Volitional Attention)
  - 1. अविचारित (Implicit)
  - 2. विचारित (Explicit)
- 2. अनैच्छिक अवधान (Non-Volitional Attention)
  - 1. सहज (Spontaneous)
  - 2. बाध्य (Enforced)

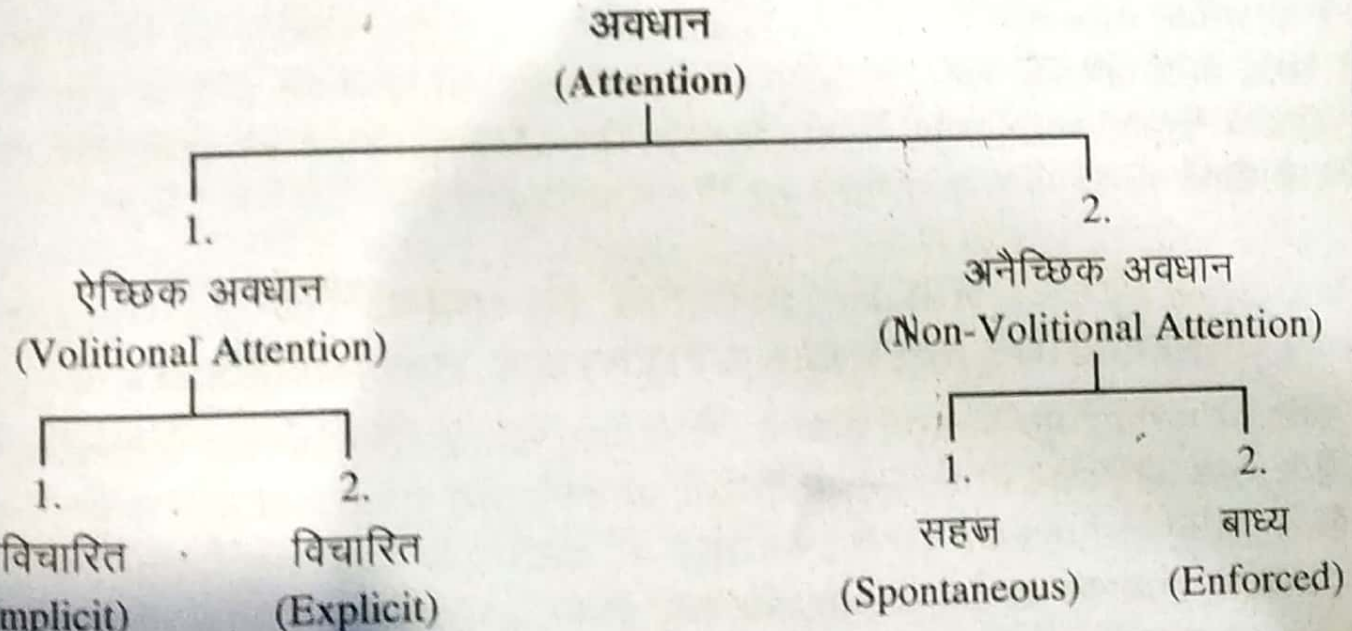

उपर्युक्त तालिका का हम निम्न प्रकार स्पष्टीकरण कर सकते हैं—

Scanned by CamScanner

अवधान का शैक्षिक आशय
(Educational Implication of Attention)

अवधान जैसी प्रक्रिया का महत्त्व शिक्षा में काफी है। इससे शिक्षकों एवं छात्रों को अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाने में काफी मदद मिलती है। शिक्षा में अवधान के शैक्षिक महत्त्व एवं आशय की व्याख्या हम इस प्रकार कर सकते हैं—

(1) कक्षा में शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट रखें। इसके लिए वे ध्यान के बाह्य निर्धारकों को काम में ला सकते हैं। इन निर्धारकों का उपयोग करके शिक्षक अपनी बातों को अधिक रुचिकर बना सकते हैं और तब छात्र अपने-आप ही उनकी बातों की ओर ध्यान देना प्रारंभ कर देंगे।

(2) कक्षा में शिक्षकों द्वारा एक ऐसा माहौल रखना चाहिए कि छात्र को किसी प्रकार के डर एवं बाध्यता (compulsion) का अनुभव नहीं हो। ऐसा होने से छात्र स्वयं ही शिक्षकों की बातों एवं उनके द्वारा पढ़ाए जानेवाले विषयों पर काफी ध्यान देंगे।

(3) शिक्षकों को कक्षा में छात्रों को, विशेषकर जब छात्र छोटे हों, तो उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए कुछ खिलौनों एवं हास्य चित्रांकनों का भी उपयोग करना चाहिए।

(4) छात्र शिक्षक की बातों में और अपनी पठन-सामग्रियों में अधिक रुचि दिखावें एवं उसकी ओर अधिक ध्यान दें, इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में क्लिष्ट भाषा का प्रयोग न करें क्योंकि अवधान का एक नियम (principle) यह है कि जिन चीजों या वस्तुओं का अर्थ व्यक्ति द्वारा नहीं समझा जाता है, वह उसपर ध्यान भी नहीं दे पाता है।

(5) शिक्षक को छात्रों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए अध्यापन की उचित विधि का सहारा लेना चाहिए। अध्यापन की विधि ऐसी होनी चाहिए जिसमें छात्र में कक्षा में सहभागिता (participation) की भावना अच्छी हो तथा उनमें कभी ऊब (bore) का अनुभव नहीं हो।

Scanned by CamScanner